FirstRanker.com
Firstranker's choice
www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

HINDI COURSE-B (085) CLASS-X

खण्ड - क

प्र०:-१

क) अज्ञान में जीवित रहना मृत्यु से अधिक कष्टकर है क्योंकि
से ही जीवन के रहस्य खुलते हैं और मनुष्य को उसकी पहचान
शिक्षा मनुष्य यह ज्ञान देती है तथा मस्तिष्क और देह का उचित
है।

ख) शिक्षा के कई लाभ हैं, जैसे -

१. शिक्षा मनुष्य तथा समाज के विकास हेतु अनिवार्य है क्योंकि
मनुष्य को उसकी पहचान के अलावा जीवन के अनेक रहस्य
कराती है तथा कुछ गंभीर चिंतन भी देती है।

२. शिक्षा ही मनुष्य को मस्तिष्क और देह का उचित प्रयोग
है। शिक्षा एक मनुष्य को सुसंस्कृत, सभ्य, सच्चरित्र एवं
भी बनाती है।

ग) अधिकारों और कर्तव्यों का पारस्परिक संबंध यह है कि
व्यक्ति को अपने अधिकारों जितना ही अपने उत्तरदायित्वों
कर्तव्यों का भी ध्यान रखना चाहिए क्योंकि एक मनुष्य

www.FirstRanker.com

FirstRanker.com
Firstranker's choice
www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

उत्तरदायित्व निभाने और कर्तव्य करने के बाद ही अधि
पाने का अधिकारी बनता है।

घ) शिक्षा व्यक्ति और समाज दोनों के विकास के लिए आवश्यक है
एक व्यक्ति के तौर पर ज्ञान के प्रकाश से ही जीवन के रहस्
हैं और एक व्यक्ति अपनी पहचान पाता है। एक समाज
शिक्षा अत्यधिक आवश्यक है क्योंकि वह मनुष्य को समाज है
सभ्य, सच्चरित्र एवं अच्छा नागरिक बनाती है तथा मनु
आत्मिक ज्ञान देती है।

ङ.) उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक "शिक्षा और उसके द्
सकता है।

न0:-2

क) समुद्र में जातियाँ धोकर आने से कवि का यह तात्पर्य है कि
वासियों अपनी अलग-अलग जातियाँ तथा अपनी प्रांतों की
को भूलना होगा उन्हें हर तरह तथा हर स्थान से निकाल

www.FirstRanker.com

FirstRanker.com
Firstranker's choice
www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

तथा बस इतना स्मरण रखना होगा होगा कि हम सब सिर्फ़ हिंदुस्तानी हैं। भले ही भारत देश ने हर जाति को अपनाया ठीक उसी प्रकार हम भी हर जाति भूलकर सिर्फ़ भारत को अपनाएँ।

प्र० :- 3

ख) 'बस एक ही मंदिर हो हमारा' से कवि का आशय है कि हर भारत के वासी को अपने अलग - अलग धर्मों को भुलाकर एक साथ एक ही धर्म के नीचे रहना होगा और वह धर्म होगा हिंदुस्तानी और इस एक धर्म का बस एक ही मंदिर हो और वह हो हमारी मातृभूमि, हमारा भारत देश। इस मंदिर की रक्षा हेतु हर हिंदुस्तानी सदैव तत्पर रहे।

ग) हमारी अलग - अलग पहचानें हैं क्योंकि हमारी मातृभूमि, हमारे देश ने हम संतानों बिना जाति - धर्म की पहचान किए पाला है और हमारी हर आवश्यकता को पूरा किया है।

हमारी अलग - अलग पहचानों को एक में समेटा जा सकता है और वह हैं हमारे हिंदुस्तानी धर्म में जिसका सिर्फ़ एक मंदिर होगा, यह पूर्ण देश जहाँ पर हर पहचान मिट जाएगी और याद रहेगी सिर्फ़ देशभक्ति।

www.FirstRanker.com

FirstRanker.com
Firstranker's choice

खण्ड - ख

प्र०:- 3

शब्द के पद बनने पर यह परिवर्तन होता है कि उस शब्द समाप्त हो जाती है तथा वाक्य में प्रयुक्त होकर वह शब्द को प्रकार्य अवश्य करता है तथा उस शब्द में कोई-न-कोई रूप शब्द-साधक अथवा शून्य प्रत्यय अवश्य लगता है।

उदाहरण -

'लड़का' एक शब्द है।
वाक्य में प्रयुक्त होते ही,

लड़का विद्यालय जाता है।

लड़का' में ~~शून्य~~ शून्य प्रत्यय लग जाता है तथा यह स प्रकार्य कर रहा है और अब यह शब्द न रहकर पद ब है।

6

प्र०:-४

क) सूर्योदय होते ही चिड़ियाँ चहचहाने लगीं।

ख) जब तताँरा वामीरो से मिला तब उसके जीवन में परिवर्तन

घ) जब नींव कच्ची होती है तब मकान कमजोर रहता है।

प्र०:-५

(क)

(ii) मदांध - मद में अंधा (अधिकरण तत्पुरुष समास)

(iii) परोपकार - पर (दूसरों) पर उपकार (अधिकरण तत

(ख)

(ii) कमल जैसे चरण - चरणकमल (कर्मधारय समास

(iii) कन्या का दान - कन्यादान (संबंध तत्पुरुष स

FirstRanker.com
Firstranker's choice
www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

प्र०:-६)

क) भाई साहब फ़ेल और मैं पास हो गया।

ग) आप जब मिलने आएँ तब फ़ोन कर लीजिएगा।

घ) हमने तो घर पहुँचते ही सारी बात बता दी थी।

ङ) लड़कों को समझाएँगे तो वे मान जाएँगे।

प्र०:-७)

क) वे हर बात में टाँग अड़ाते हैं।

ख) भारतीय सैनिकों ने दुश्मन के छक्के छुड़ा दिए।

www.FirstRanker.com

8

खण्ड - ग

प्र०:- ८

क) छोटे भाई को बड़े भाई की बातों से लघुता का अनुभव तब हु
उनके बड़े भाई ने उन्हें बताया कि भले ही वह बड़े भाईसाहब
क्यों न आ जाए परंतु अनुभव ज्ञान में वह उनसे सदैव छोटा
किताबी ज्ञान से सर्वोपरि अनुभव ज्ञान है। छोटे भाई को
से लघुता का अनुभव इसलिए हुआ क्योंकि वह समझ गए कि
किताबी ज्ञान उन्हें उनके पिताजी जितना अनुभवी नहीं बना
इसी प्रकार वह अनुभव में अपने बड़े भाईसाहब से छोटा

ख) सुभाष बाबू के जुलूस में स्त्री समाज की अत्यंत महत्व
थी क्योंकि मोनुमेंट के नीचे स्त्री समाज ने ही झंडा फह
पढ़ी तथा लाठी पड़ने पर भी अपने स्थान पर
उनको गिरफ़्तारी का भय नहीं था न ही लाठी की मार
बस भारत के आंदोलन को आगे बढ़ाना था। इस आंदोलन
गिरफ़्तार हुईं तथा लक्ष्य प्राप्त होने के बाद वे धर्मतल्ले के
जुलूस तोड़कर बैठ गईं। इस प्रकार सुभाष बाबू की गिरफ़्तारी
स्त्री समाज ने हर ज़िम्मेदारी को अपने कंधों पर उठाकर अ
सफल बनाया।

www.FirstRanker.com

द्र केलेकर ने स्पर्श के पाठ 'झेन की देन' में वर्तमान को
ना है। भूत, भविष्य और वर्तमान में वर्तमान को सत्य
है क्योंकि भूत बीत चुका है तथा भविष्य किसी ने देखा नहीं
ष्य वर्तमान में ही जीता है तथा वही सत्य है।

ठ्यपुस्तक 'स्पर्श' के पाठ 'पतझर में टूटी पत्तियाँ' के लेखक
कर के अनुसार शुद्ध सोना, शुद्ध आदर्श की तरह होता
किसी भी प्रकार की मिलावट नहीं की जाती है। वहीं दूसरी
नी का सोना, शुद्ध सोने में मिलाया हुआ तांबा होता है
र शुद्ध आदर्शों में थोड़ी-सी व्यवहारिकता मिलाकर
आइडियालिस्ट' बनते हैं। इस प्रसंग में महात्मा गांधी की
। लेखक पाठक को यह बताने चाहते हैं कि वे व्यवहारिकता
। आदर्शों के स्तर पर लाते थे जैसे कि वे सोने में तांबा नहीं
तांबे में सोना मिलाकर उसकी कीमत बढ़ाते थे। इसी कारण
को आज़ाद करवा पाए अन्यथा हवा में ही उड़ते रहते। अके
आंदोलन इसी बात का सबूत है कि वे पूर्ण देश का उत्थान

www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com
FirstRanker.com
Firstranker's choice

FirstRanker.com
Firstranker's choice
www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

करना चाहते थे बिना स्वयं के लाभ के बारे में सोचे ज
व्यवहारिकता की सहायता से कर पाए। इस संसार में व्य
लोग सफ़लता प्राप्त करते हैं तथा ऊपर सिर्फ़ स्वयं उठते हैं
आदर्शवादी सबको साथ लेकर ऊपर उठते हैं तथा लोक-कल
समाज कल्याण को समर्पित होते हैं।

प्र०:-10

क) कबीर ने सदैव मीठी वाणी बोलने की सलाह दी है क्योंकि
बोलने के अनेक लाभ होते हैं जैसे कि बोलने व सुनने वा
सुख व आनंद की प्राप्ति होती है तथा मीठी वाणी बोलने व
तन भी सकारात्मकता व शीतलता प्राप्त करता है।

ख) 'मनुष्यता' कविता में उदार व्यक्ति की यही पहचान बताई
उसकी सदा सुमृत्यु होती है, वह सबका हितैषी होता है,
बखान सरस्वती किताबों के रूप में करती है तथा धरती भी
कृतार्थ भाव मानती है। इन व्यक्तियों के लिए कविता में
सहानुभूति, दया, सत्यवादिता, बलिदानी आदि भाव व्यक्त

www.FirstRanker.com

ग) 'आत्मत्राण' कविता में कवि रवींद्रनाथ ठाकुर ~~के~~ सहायक
पर ईश्वर से बस इतनी प्रार्थना करते हैं कि उनका आत्म
पुरुषत्व कदापि न हिले और वे उस अवस्था में भी अ
रहें।

10:-११

हमारी पाठ्यपुस्तक 'स्पर्श' के पाठ 'पर्वत प्रदेश में पावस
सुमित्रानंदन पंत ने पर्वतीय प्रदेश में वर्षा का अत्यंत सुंद
चित्रण करते हुए कहा है कि वर्षा ऋतु में पर्वत प्रदेश में प्रकृ
अपना वेष बदल रही थी, कभी तेज़ वर्षा तो कभी तेज़ धूप हो
इन सब के बीच अनेक मेखलाकार पहाड़ों से बहता हुआ जल
चरणों में दर्पण रूपी तालाब बना दे रहा था जहाँ से सहस्त्र
ऐसे प्रतीत हो रहे थे कि पर्वतों के नेत्र बनकर वे उस द
का प्रतिबिंब देख रहे हैं। उन पर्वतों से बहते हुए झरने
लड़ियों से प्रतीत हो रहे थे। साथ ही चारों तरफ़ बिजली
अपने पर फैला रही थी। पर्वतों पर उपस्थित वृक्ष ऊँची
को दिखा रहे थे तथा कई शाल के वृक्ष मिट्टी में दूटने के

हैं।

FirstRanker.com
Firstranker's choice
www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

उसमें धँस चुके थे। चारों तरफ़ बरसते जल के कारण ज
उठ रहा था उससे ऐसा लग रहा था मानो पर्वत प्रदेश
है। चारों तरफ़ के सन्नाटे में सिर्फ़ बहते हुए झरनों की आव
शेष रह गई थी। इस प्रकार ऐसा प्रतीत हो रहा था कि
अपनी सवारी पर विचर-विचर जादुई खेल दिखा रहे हों।

प्र०:- १२

"अनपढ़ होते हुए भी हरिहर काका दुनिया की अच्छी समझ
हमारी पूरक पुस्तक 'संचयन' के पाठ "हरिहर काका" में
मिथिलेश्वर ने उपर्युक्त पंक्तियों को बखूबी दर्शाया है। हरि
के पास पंद्रह बीघे ज़मीन थी। उस ज़मीन पर ठाकुरबारी
जी तथा उनके तीन भाईयों की बराबर नज़र थी। उन दोनों
तरफ़ से हरिहर काका को ज़मीन उनके नाम करने का प्रस्ता
बार आया परंतु उन्होंने उसे कदापि नहीं स्वीकारा क्योंकि
होते हुए भी उन्हें अनुभव ज्ञान बखूबी था। वे जानते
अगर उन्होंने अपनी ज़मीन किसी के भी नाम की तो उसके ब
उन्हें पूछना बंद कर देंगे। उन्होंने इसका प्रत्यक्ष उदाहरण
गाँव में ही रमेसर की विधवा के साथ भी देखा था जिन

FirstRanker.com
Firstranker's choice
www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

पुत्रों ने उनसे ज़मीन अपने नाम करवाने के बाद उन्हें दूध
की भाँति निकाल फेंका था। इसी कारण दोनों पक्षों द्वारा
के बाद भी उन्होंने अपनी ज़मीन किसी के नाम नहीं की।
है कि एक अनपढ़ व्यक्ति भी समाज में होते नकारात्मक बद
अपने अनुभव द्वारा समझ सकता है तथा समाज की कु
से भी बचा रह सकता है। यही कारण है कि हरिहर काका
जीते जी कितने ही दबाव के बावजूद किसी के नाम नहीं की
उन्हें अपने अनुभव ज्ञान से दुनिया की अच्छी समझ हो
जिस कारण वह अचरज में भी थे तथा असमंजस में भी
किस ओर जा रहा है।

खण्ड - घ

Q. १३

अनुच्छेद लेखन -

ख)

(कृपया

www.FirstRanker.com

FirstRanker.com
Firstranker's choice
www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

समय का सदुपयोग

समय बहुत ही मूल्यवान वस्तु है और समय किसी
नहीं रुकता । जो वक्त रहते समय का सदुपयोग नहीं
वह जीवन में सदैव पछताता है। समय का सदुपयोग
वाला इंसान जीवन में सदा उन्नति करता है। समय का
कई प्रकार से किया जा सकता है वक्त रहते अपना कार्य
करके, मोबाइल, टी०वी० में समय व्यर्थ न करके ।
मनुष्य का धर्म उसका कर्म होता है जिसको उसे समय
अंतर्गत ही करना होता है। मनुष्य अगर अपना ध्यान
कर्म पर केंद्रित करता है तो वह समय का सदुपयोग
समय के दुरुपयोग के भी अनेक खतरे हैं जैसे- स
दुरुपयोग से मनुष्य का पूर्ण जीवन समाप्त हो सकता है,
स्वास्थ्य को भी इससे बहुत बड़ा खतरा है जैसे अधिक स
पर व्यतीत करने से और अपना कार्य पूर्ण न करने से म
आँखों को नुकसान पहुँचता है, एक समय-सारिणी का पा
करके मनुष्य अपना कोई भी कार्य समय पर खत्म
कर पाता और असफलता प्राप्त करता है। जो समय का अ
सदुपयोग करता है वह जीवन नई ऊँचाइयों को प्राप्त कर

www.FirstRanker.com

प्र०:-१४ औपचारिक पत्र लेखन -

परीक्षा भवन
अ०ब०स० विद्यालय
क०ख०ग० नगर

१६

स्वास्थ्य अधिकारी
नगर निगम
क०ख० ग० नगर

विषय - बस्ती में आवारा कुत्तों समस्या के निवारण हेतु

मान्यवर,
मैं क०ख०ग० नगर की च०छ०ज० बस्ती का निवासी
कुत्तों के कारण हो रही समस्याओं से आपको अवगत कर
हमारी बस्ती में आए दिन कोई-न-कोई
कुत्तों का शिकार हो रहा है तथा उन्होंने हमारी बस्ती
की काटकर हत्या भी कर दी है। वे हर रोज हमारी
कूड़ा फैला देते हैं तथा उनका मल-मूत्र नई बीमारियो
बन रहा है।

FirstRanker.com
Firstranker's choice
www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

अतः मेरा आपसे यह अनुरोध है कि जल्द -से- ज
आवारा कुत्तों हेतु नए आवास ~~हेतु~~ का कार्य आरंभ किया जाए त
प्रभावित लोगों को चिकित्सा हेतु धन - राशि प्रदान की जाए

सधन्यवाद।
भवदीय,
ट० ठ० ड

प्र०:- १५

सूचना लेखन

→

FirstRanker.com
Firstranker's choice
www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

सूचना
अं०ब०स० विद्यालय
क० ख० ग० नगर

१६ मार्च , २०१६

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि विद्यालय "वार्षि
२०१६" मनाएगा जिसकी जानकारी निम्नलिखित है -
तिथि - ३१ मार्च , २०१६
समय - प्रातः ८ बजे से सायं ६ बजे तक
स्थान - खेल मैदान , अं०ब०स० विद्यालय , क०ख०ग० नगर
इस कार्यक्रम में नृत्य , संगीत , कला आदि कलाओं में
हेतु इच्छुक छात्र अपना नाम खेल मैदान में सचिव को
ट०ठ०ड
सचिव
छात्र कल्याण - परिषद्

www.FirstRanker.com

प्र०:-१६

संवाद लेखन –

मित्र 1- राम मित्र 2- रमेश

राम – अरे! रमेश तुम भी यह चलचित्र देखने यह
अगर मुझे बताते तो हम साथ चलते।

रमेश – प्रणाम मित्र। मुझे नहीं पता था कि तुम्हें चल
है, मैं तो तुम्हें किताबी कीड़ा समझता था।

राम – नहीं मित्र, ऐसा नहीं है। मैं वे चलचित्र अ
हूँ जो समाज को एक अच्छा संदेश देते हैं।
से मैं और लोगों को भी अवगत करता हूँ।

रमेश – यह तो अद्भुत बात है। मैं इस चलचित्र को
बार देख रहा हूँ। मैं जब भी इस चलचित्र क
हूँ तो मेरे अंदर देश के लिए कुछ करने की भाव
जाती है।

FirstRanker.com
Firstranker's choice
www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

राम - यह तो अच्छी बात है। वैसे इस चलचित्र
के बारे में बताया गया है। क्या तुम इस प्रथा
रखते हो?

रमेश - बिल्कुल नहीं मित्र। एक बेटी ही उसके मात
सबसे बड़ा दहेज होती है, उससे अधिक किसी
क्या चाहिए?

राम - बिल्कुल उचित कहा मित्र परंतु मुझे अफ़सोस
है कि समाज में इसका प्रचलन आज भी है।

रमेश - मित्र, कई बार तो मैं यह सोचता हूँ कि
का मकसद तब तक अधूरा रहेगा जब त
बदलाव नहीं आएगा।

राम - चलो मित्र, अब हम ही यह पहल करें
से और छात्रों सहित अध्यापिका की आज्ञा
अवगत करने चलेंगे और शुरुआत
से।

www.FirstRanker.com

FirstRanker.com
Firstranker's choice
www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

रमेश - बिल्कुल ठीक कहा। तो मित्र
हम एक नए उत्साह तथा नई उमंग

प्र०:-१७

विज्ञापन लेखन –

पुराने मकान में नए क

यह आलीशान मकान अब बहुत कम दाम में सिर्फ - 50लाख

होली के अवसर पर भारी छूट

पुरानी सड़क, अ०ब०स० नगर के पास

7 क
2 श

शहर में अपना घर हो तो शहर

अब अपनी होली नए घर में !!

मो

www.FirstRanker.com

FirstRanker.com
Firstranker's choice
www.FirstRanker.com
www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com

FirstRanker.com
Firstranker's choice
www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com

FirstRanker.com
Firstranker's choice
www.FirstRanker.com www.FirstRanker.com

www.FirstRanker.com